HISTORY (H)

B.A. – III
PAPER – Vth
HISTORY OF INDIA (1550 – 1750)
UNIT – 3rd

⇒ ~~Agrarian~~ Agrarian structure

⇒ खाद, बीज एवं कीटनाशक आदि के प्रयोग की तकनीक :-

भूमि की उर्वरा शक्ति को स्थापित रखने एवं अधिक उत्पादकता के उद्देश्य से खेतों की विविध प्रकार की खादों का प्रयोग भारत में प्राचीन काल से ही होता आ रहा है, अर्थशास्त्र में शहद, गोबर, हड्डियों एवं मछलियों का उर्वरक के रूप में प्रयोग किया जाता था।

विशेष रूप से पशुओं के गोबर व इसी तरह की खादों ने खेती की उर्वरता को बनाये रखने व बढ़ाने में पर्याप्त योगदान दिया कृषि पराशर नामक ग्रंथ में गाय के गोबर से खाद बनाने तथा इसके उपयोग के बारे में स्पष्ट उदाहरण

Scanned with CamScanner

मिलते हैं।

खेतों में खाद डालने की प्रक्रिया भी कम महत्वपूर्ण नहीं थी। फसलों की प्रकृति के अनुसार ही खाद का प्रकार एवं उसकी मात्रा निर्धारित की जाती थी। आमतौर पर खेतों में खाद डालने की दो विधियाँ प्रचलित थी। एक यह कि विभिन्न उर्वरक पदार्थों के मिश्रण का घोल बनाकर बीज में ही लगा दिया जाता था और दूसरा खाद के बीज बोते समय अथवा अंकुरण के बाद खेतों में डाला जाता था।

⇒ रोपण एवं उत्पादन की तकनीक :-

खेतों में बीज रोपित करने से पूर्व हल द्वारा खेतों की जुताई की जाती थी। इसमें मिट्टी के बड़े ढेले टूट जाते थे और मिट्टी ढीली पड़ जाती थी। बीज बोने की कई विधियाँ थी जिसमें छिड़क कर बोना सबसे आसान विधि थी। कुछ फसलों जैसे कपास आदि के रोपण में नारीवीक/बिसात ड्रिल यंत्र का प्रयोग करते थे।

धान की बुआई का [illegible] से भिन्न था। धान के बीज खेत के एक हिस्से में मानसून के पूर्व

Page No.:
Date:

छींट कर पानी के छिड़काव या अंकुरण के पश्चात जब धान के कुछ पौधे बढ़ जाते थे तो उन्हे सावधानीपूर्वक जड़ सहित उखाड़कर पानी से भरे खेतों में अपेक्षित दूरी रखते हुए पंक्तियों में रोपित किया जाता था।

⇒ अनाज भंडारण / संरक्षण की तकनीक – फसलों के दाने निकलने के बाद उन्हें संग्रहित रखना का महत्वपूर्ण था। अनाज भंडारण का समान्य तरीका खत्तियां में रखना था। जिससे अनाज दीर्घ काल तक सुरक्षित रखा जा सकता था। ये गड्ढे या खत्तियाँ ऊंचे व सूखे स्थानों पर बना दी जाती थी।

पानी की बौछार में क्षतिग्रस्त हो जाने पर उसे फिर गोबर मिट्टी के मिश्रण से लीप दिया जाता था। इस प्रकार अनाज बिना क्षति के वर्षों सुरक्षित रखा जा सकता था। अंदर इसके द्वारा उत्पन्न गर्मी कीट-नाशकों का रोकती थी तथा चूहों व दीमकों को भी दूर रखा

Page No.:
Date:

जा सकता था। कभी-कभी इन खेतियों में अनाजों के बीच नीम की पत्तियाँ भी रख दी जाती थी अतएव तत्कालीन कृषिगत विशिष्टता के आधार पर भारतीय कृषि में प्रगति के स्पष्ट संकेत मिलते है।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. College, Tajpur

Scanned with CamScanner